



# एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)

[www.agriarticles.com](http://www.agriarticles.com) पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

## सतत कृषि के लिए जैविक खेती

(‘अर्पित सोमतिया’, डॉ. सीमा नबेरिया<sup>1</sup> एवं चारु जामनोटिया<sup>2</sup>)

<sup>1</sup>विस्तार शिक्षा विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

<sup>2</sup>आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

\*संवादी लेखक का ईमेल पता: [arpits0153@gmail.com](mailto:arpits0153@gmail.com)

**जैविक खेती** एक कृषि तकनीक है जो स्वस्थ फसलों और पशुधन के पोषण के लिए प्राकृतिक तरीकों और सामग्रियों के उपयोग पर जोर देती है। यह प्रथा कीटनाशकों और उर्वरकों जैसे सिंथेटिक रसायनों के उपयोग से बचती है, और टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल कृषि प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करती है। जैविक खेती एक कृषि दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य सिंथेटिक उर्वरकों, कीटनाशकों और आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (जीएमओ) के उपयोग को कम करते हुए भोजन और फाइबर का उत्पादन करना है। इसके बजाय, यह मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, पौधों के स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने और टिकाऊ कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए फसल चक्र, खाद और जैविक कीट नियंत्रण जैसे प्राकृतिक तरीकों पर निर्भर करता है।

हाल के वर्षों में, जैविक खेती की ओर एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है क्योंकि उपभोक्ता अपने स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हो गए हैं।

### जैविक खेती के प्रकार

**पारंपरिक जैविक खेती:** पारंपरिक जैविक खेती ही जैविक कृषि की नींव है। यह जैव विविधता के संरक्षण और मिट्टी में प्राकृतिक उर्वरता बनाए रखने पर जोर देता है। किसान मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने और पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के लिए फसल चक्र अपनाते हैं और खाद बनाने की तकनीक का उपयोग करते हैं। उर्वरक, कीटनाशक और शाकनाशियों जैसे सिंथेटिक इनपुट का न्यूनतम उपयोग पारंपरिक जैविक खेती की एक प्रमुख विशेषता है।

**बायोडायनामिक खेती:** बायोडायनामिक खेती खेत को एक आत्मनिर्भर और परस्पर जुड़े जीव के रूप में मानते हुए, खेती के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाती है। इसमें मिट्टी, पौधों और जानवरों के इलाज के लिए प्राकृतिक तैयारी और होम्योपैथिक उपचार का उपयोग शामिल है। बायोडायनामिक किसान चंद्र चक्र और ग्रहों की चाल जैसी ब्रह्मांडीय शक्तियों को शामिल करके मिट्टी के स्वास्थ्य को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

**पर्माकल्चर:** पर्माकल्चर टिकाऊ पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए एक डिजाइन प्रणाली है। इसका उद्देश्य ऐसी कृषि प्रणालियाँ विकसित करना है जो मानव आवश्यकताओं के लिए उत्पादों की एक श्रृंखला प्रदान

करते हुए प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र की नकल करें। पर्माकल्चर डिज़ाइन सिद्धांतों में विभिन्न पौधों और जानवरों की प्रजातियों की सावधानीपूर्वक योजना और एकीकरण, मिट्टी के स्वास्थ्य और उर्वरता को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक प्रक्रियाओं का उपयोग करना और आत्मनिर्भरता और पारिस्थितिक संतुलन को बढ़ावा देना शामिल है।

**गहन जैविक खेती:** गहन जैविक खेती उन्नत कृषि तकनीकों का उपयोग करके सीमित स्थानों में अधिकतम उत्पादन पर केंद्रित है। इसमें फसलों की उच्च घनत्व वाली खेती और भूमि, पानी और ऊर्जा जैसे संसाधनों का कुशल उपयोग शामिल है। इस दृष्टिकोण का उपयोग करने वाले किसान अक्सर नियंत्रित वातावरण में फसल उगाने के लिए ऊर्ध्वाधर खेती, एक्वापोनिक्स और हाइड्रोपोनिक्स जैसे नवीन तरीकों को अपनाते हैं।

### जैविक खेती के लाभ

- पर्यावरणीय स्थिरता
- मृदा स्वास्थ्य में सुधार
- स्वस्थ भोजन
- जैव विविधता संरक्षण

### जैविक खेती की चुनौतियाँ

जबकि जैविक खेती टिकाऊ कृषि के लिए कई लाभ प्रदान करती है, यह कुछ चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है जिनका किसानों को समाधान करने की आवश्यकता है। इसमें शामिल है:

- उच्च श्रम आवश्यकताएँ
- कम पैदावार
- प्रमाणीकरण और बाज़ार पहुंच

### किसानों के लिए लाभ

1. स्वस्थ मिट्टी: जैविक खेती पद्धतियाँ खाद और खाद जैसे कार्बनिक पदार्थों के उपयोग को प्राथमिकता देती हैं, जो मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाती हैं। यह लाभकारी सूक्ष्मजीवों और केंचुओं के विकास को बढ़ावा देता है, जिससे मिट्टी की संरचना और पोषक तत्वों की उपलब्धता स्वस्थ होती है।
2. रासायनिक जोखिम में कमी: सिंथेटिक कीटनाशकों और उर्वरकों को खत्म करके, जैविक किसान हानिकारक रसायनों के संपर्क को कम करते हैं। यह न केवल किसानों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है बल्कि जल निकायों और आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र की गुणवत्ता को भी संरक्षित करता है।
3. कम उत्पादन लागत: हालाँकि जैविक खेती में परिवर्तन के लिए प्रारंभिक निवेश की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन इससे दीर्घकालिक उत्पादन लागत कम हो सकती है। जैविक किसान प्राकृतिक कीट नियंत्रण विधियों और पोषक तत्व प्रबंधन तकनीकों पर भरोसा करते हैं, जिससे महंगे रासायनिक इनपुट की आवश्यकता कम हो जाती है।
4. बाज़ार की मांग: हाल के वर्षों में, जैविक उत्पादों की उपभोक्ता मांग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसने जैविक किसानों के लिए एक आकर्षक बाज़ार तैयार किया है, जिससे उन्हें अपनी उपज के लिए प्रीमियम मूल्य प्राप्त करने की अनुमति मिली है।

## सतत कृषि के लिए जैविक खेती

पर्यावरण संरक्षण और स्वस्थ भोजन विकल्पों के लिए बढ़ती चिंता के साथ, जैविक खेती टिकाऊ कृषि के लिए एक व्यवहार्य समाधान के रूप में उभरी है। जैविक प्रथाओं को अपनाकर, किसान प्राकृतिक तरीकों के उपयोग को प्राथमिकता देते हैं और सिंथेटिक रसायनों, आनुवंशिक रूप से संशोधित जीवों (जीएमओ) और उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से बचते हैं। यह लेख जैविक खेती से न केवल पर्यावरण को बल्कि मानव स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था को भी मिलने वाले अनेक लाभों की पड़ताल करता है।

जैविक खेती में एक समग्र दृष्टिकोण शामिल है जो मिट्टी, पौधों, जानवरों और उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य और जीवन शक्ति को बढ़ाने का प्रयास करता है। आइए जैविक खेती के प्रमुख लाभों के बारे में जानें:

**मृदा स्वास्थ्य का संरक्षण: सतत कृषि की नींव:** जैविक किसान फसल चक्र, आवरण फसल और खाद जैसी प्रथाओं को लागू करके मिट्टी की जीवन शक्ति को प्राथमिकता देते हैं। ये विधियाँ मिट्टी की उर्वरता बनाए रखने, कटाव को रोकने और पोषक तत्वों के अपवाह को कम करने में योगदान देती हैं। पारंपरिक खेती के विपरीत, जो सिंथेटिक उर्वरकों पर बहुत अधिक निर्भर करती है, जैविक खेती मिट्टी के भीतर प्राकृतिक पोषक चक्र को बढ़ावा देती है, जिसके परिणामस्वरूप स्वस्थ और अधिक लचीला पारिस्थितिकी तंत्र बनता है।

**जल की गुणवत्ता की रक्षा करना: हानिकारक अपवाह को कम करना:** सिंथेटिक कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग से बचकर, जैविक किसान जल प्रदूषण के खतरे को काफी कम कर देते हैं। पारंपरिक खेती में उपयोग किए जाने पर ये रसायन नदियों, झीलों और भूजल में जा सकते हैं, जिससे जलीय पारिस्थितिकी तंत्र को नुकसान हो सकता है और संभावित रूप से पीने के पानी के स्रोत प्रभावित हो सकते हैं। जैविक खेती के माध्यम से, पानी की गुणवत्ता सुरक्षित रहती है, जिससे वन्यजीव और मानव समुदाय दोनों को लाभ होता है।

**जैव विविधता को बढ़ावा देना: पारिस्थितिक रूप से संतुलित खेत का पोषण करना:** जैविक खेती पद्धतियाँ जैविक विविधता के महत्व पर जोर देती हैं। रासायनिक कीटनाशकों से बचकर, जैविक किसान लाभकारी कीड़ों, पक्षियों और अन्य प्राकृतिक शिकारियों की उपस्थिति को प्रोत्साहित करते हैं जो कीटों को नियंत्रित करने में मदद करते हैं। यह एक संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देता है और कृत्रिम कीट नियंत्रण विधियों की आवश्यकता को कम करता है। इसके अलावा, जैविक खेतों में अक्सर हेजरोज़ और घास के मैदान शामिल होते हैं, जो मधुमक्खियों और तितलियों जैसे परागणकों के लिए आवास प्रदान करते हैं, जो फसल उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**खाद्य पोषण और सुरक्षा बढ़ाना: एक स्वस्थ विकल्प:** जैविक खेती प्राकृतिक, पोषक तत्वों से भरपूर मिट्टी को प्राथमिकता देती है, जिससे ऐसा उत्पादन होता है जिसमें अक्सर लाभकारी विटामिन, खनिज और एंटीऑक्सीडेंट अधिक होते हैं। इसके अलावा, चूंकि जैविक किसान सिंथेटिक रसायनों का उपयोग नहीं करते हैं, उपभोक्ता हानिकारक कीटनाशक अवशेषों से मुक्त फलों, सब्जियों और अनाज का आनंद ले सकते

हैं। यह जैविक उत्पादों को व्यक्तियों के लिए एक स्वस्थ विकल्प बनाता है और रासायनिक जोखिम से जुड़े संभावित जोखिमों को कम करता है।

**स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करना: समुदायों को मजबूत बनाना:** जैविक खेती अधिक स्थानीयकृत और विविध कृषि परिदृश्य को बढ़ावा देती है। जो किसान जैविक पद्धतियों को चुनते हैं वे अक्सर स्थानीय उपभोक्ताओं, किसान बाजारों और समुदाय-समर्थित कृषि (सीएसए) कार्यक्रमों को सीधे बिक्री में संलग्न होते हैं। यह स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का समर्थन करता है और जीवंत, लचीले समुदायों के निर्माण में मदद करता है। इसके अतिरिक्त, जैविक खेती रोजगार के अवसर पैदा करती है, ग्रामीण विकास में योगदान देती है और किसानों के लिए स्थायी आजीविका को बढ़ावा देती है।